Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

राजस्थान के कृषि क्षेत्र में विकास और बदलाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन जयपुर जिले के सन्दर्भ

श्री गोपाल लाल जाट शोधार्थी, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

ABSTRACT:

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। राजस्थान भारत का उत्तर-पश्चिमी राज्य है, जिसकी लगभग 70% जनसंख्या प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यो में जुड़ी हुई है। राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य होने के बावजूद शुष्क मरुस्थलिय जलवायु और पानी की कमी के कारण कृषि उत्पादन में पिछड़ा हुआ है। किसान अनेक समस्याओं जैसे- अशिक्षा, अज्ञानता, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियां, आत्महत्या, ऋणग्रस्तता, मानसून की विफलता, कृषि लागत में वृद्धि आदि समस्याओं से जूझ रहे हैं। किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण एवं वैश्वीकरण के साथ-साथ कृषि ऋण व्यवस्था, कृषि विपणन व्यवस्था, सतत कृषि विकास, योजनाबद्ध तरीकों से विभिन्न योजनाओं को लागू करना तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं में दी जाने वाली सब्सिडी का सोशल ऑडिट करना जरूरी है। ताकि सरकारी अधिकारी एवं बिचौलिए किसानों को दिया जाने वाले लाभ को हड़प ना सकें। साथ ही योजना का लाभ केवल प्रभावशाली किसानों तक ही सीमित न रहे। किसानों को शिक्षित करने के लिए विभिन्न प्रसार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, किसान कॉल सेंटर के माध्यम से उनकी विभिन्न समस्याओं का निवारण, उन्नत कृषि यंत्र एवं मशीनीकरण के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन और किसानों को डिजिटल खेती के माध्यम से दूसरे किसानों के साथ जोड़ना आवश्यक है। ताकि सभी किसानों को सभी योजनाओं का पर्याप्त लाभ मिल सके। जब हमारे अन्नदाता, धरतीपुत्र कहे जाने वाले किसानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और उनके जीवन में हरियाली आएगी, तभी हमारे राष्ट्र में भी उन्नति और खुशहाली आएगी। किसानों को कर्ज माफी की नहीं बल्कि एक नियमित आय की आवश्यकता है, तभी उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधर सकती है। आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण एवं वैश्वीकरण से शिक्षा व तकनीकी ज्ञान का प्रसार हुआ है, जिससे किसानों के जीवन में आशातीत परिवर्तन हुआ है। विकास व परिवर्तन के संबंध में प्रमुख पहलू सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक है, इन सभी मे विकास व परिवर्तनगति समान अवस्था में नहीं पाई गई। जहां परंपरागत खेती के तरीकों में परिवर्तन व विकास की गति तीव्र है; वहीं सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पहलुओं में विकास और परिवर्तन की गति धीमी है। अब भी किसानों में अज्ञानता व अंधविश्वास आदि पाया जाता है।

KEYWORDS:

आधुनिकीरण, पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण, सामाजिक संस्था, डिजिटल खेती, ट्रैक्टर, मशीनीकरण, ट्यूबवेल, हाइब्रिड बीज, रासायनिक उर्वरक।

प्रस्तावना

कृषि ही भारत समेत पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। बिना भोजन के न कोई व्यवस्था काम नहीं कर सकती। भारत के लगभग 70 प्रतिशत लोग कृषि से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। किसान हमारे देश की 'रीढ की हड्डी' के समान है। वर्तमान कीमतों के अनुसार वर्ष 1950-51 में भारत की जीडीपी में कृषि का योगदान 51.81% था जो गिरकर वर्ष 1919-20 में 17.8% और 1920-21 में 19.9% रह गया है। यदि हमें भारत को उन्नतशील और सबल राष्ट्र बनाना है तो सबसे पहले किसानों को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाना होगा, इसलिए किसानों से जुड़ा कोई भी अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण हो जाता है। भारतीय किसान का जीवन बहुत कष्टपूर्ण है स्वयं उपजाने के बाद भी उसे तथा उसके परिवार को भरपेट खाने को नहीं मिलता। किसान के लिए 'कृषि एक जुआ' है, जिसे सिंचाई के साधनों के अभाव में मानसून पर निर्भर रहना पड़ता है।

भारतीय किसानों पर आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण के दोनों सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं, फिर भी कुल मिलाकर आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण और वैश्वीकरण से किसानों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पहले से मजबूत हुई है और उनके जीवन में धनात्मक परिवर्तन आया है।

भारत में आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण कोई ऐसी घटना या वस्तु नहीं है जो अचानक

समाज में उत्पन्न हो जाए। यह एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसका प्रभाव खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, तर्क, बातचीत, विवेक, आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी विकास के क्षेत्रों आदि में देखा जा सकता है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का आरंभ हुआ है। कृषि में आधुनिकीकरण की शुरूआत वर्ष 1960 के बाद प्रारंभ हुई इससे पहले यहां पर कृषि परंपरागत तरीकों जैसे हल-बैल, सिंचाई कार्य में पशुओं का उपयोग आदि द्वारा की जाती थी। परंतु वर्तमान में आधुनिकीकरण के कारण कृषि में बढ़ता मशीनों का उपयोग, नवीन तकनीकी व रासायनिक खाद व बीजों का प्रयोग होने लगा है। इसमें सबसे प्रमुख भूमिका ट्रैक्टर की है। ट्रैक्टर कृषि क्षेत्र में खेत को समतल करने, जुताई करने,खेत मे मेड बनाने, फसल काटने, फसलों को लाने वाले जाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया गतिशीलता, अपरिवर्तनीयता, क्रांतिकारी प्रकृति और विकासवादी प्रकृति वाली है। इसे विकासवादी प्रक्रिया इसलिए कहा जाता है क्योंकि आधुनिकीकरण को होने में कई सालों का समय लग जाता है। आधुनिकीकरण किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है; अपितु इस प्रक्रिया को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में घटित होते हुए देखा जा सकता है।

किसान पर आधुनिकीकरण के प्रभाव

किसानों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव उनके सामाजिक जीवन, रहन-सहन, आचार विचार, खेती करने के तरीके, उनकी पारिवारिक जीवन आदि में परंपरागत तरीकों को छोड़कर आधुनिकता को अपनाना है।

सामाजिक जीवन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

भारतीय किसान परिवारों में संयुक्त परिवार प्रथा, मुखिया का परिवार पर सत्ताधिकार, परिवार का कृषि पर आधारित जीवन, परंपराओं की प्रधानता, धार्मिक विश्वासों और पूर्वजों की पूजा आदि इसकी प्रमुख विशेषता थी। आधुनिकीकरण के कारण किसान परिवारों में सबसे बड़ा सामाजिक परिवर्तन यह पड़ा कि, संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकाकी परिवार उभरकर सामने आने लगे है। परिवार के मुखिया की स्थिति और प्रभाव में कमी हुई है। अब युवा पीढ़ी भी खुद निर्णय लेने लगी है। परंपराओं, प्रथाओं, लोकाचारों एवं धार्मिक विश्वासों के बंधन ढिले पड़ते जा रहे हैं

वास्तविकता यह है कि आधुनिकीकरण इन परिवर्तनों ने कुछ नवीन समस्याओं को जन्म दिया देने के पश्चात भी किसान के जीवन को बहुत कुछ सीमा तक प्रगतिशील बनाने में योगदान दिया है।

जाति पंचायतों में परिवर्तन -

किसान समुदाय मे आधुनिकीकरण के कारण किसान समुदायों में जाति पंचायतों की संरचना में बहुत तेजी से विघटन हुआ है। आधुनिकीकरण एवं औद्योगिकरण के कारण विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों के बीच सामाजिक संपर्क बढ़ने लगे हैं जिसके फलस्वरूप जाति पंचायतों के फैसले, जाति बहिष्कार और अन्य प्रकार के दंड का कोई व्यवहारिक प्रभाव नहीं रहा गया। आधुनिकीकरण के कारण अब गांवो में स्वतंत्रता, समानता और धर्मनिरपेक्षता जैसे विशेषताओं का प्रसार हुआ है और जाति पंचायतों के प्रभाव को कम किया गया है।

धार्मिक परिवर्तन -

किसानों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि प्रकृति पर निर्भर है इसलिए प्राकृतिक शक्तियों में किसानों का अटूट विश्वास है और किसान उनकी पूजा एव आराधना में ही अपना भला समझते हैं। किसान जब चारों ओर से निराश हो जाता है तो वह ईश्वर की शरण में आता है परंतु कभी-कभी धर्म के नाम पर तनाव, संघर्ष, दंगे भी होते हैं इस तरह धर्म अनेक सामाजिक समस्याओं को जन्म भी देता है। परंतु आधुनिकीकरण के प्रभाव से किसानों के धार्मिक अंधविश्वास में कमी आ रही है। जन्म-मृत्यू, विवाह और जीवन के अन्य क्षेत्रों में आधुनिकीकरण व शिक्षा के कारण धार्मिक रूढ़ियों किसान अब कम महत्व देने लगे हैं।

आधुनिकीकरण के कारण किसानों के विवाह संस्कार में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, बाल विवाह मे कमी आई है।

आधुनिकीकरण के कारण किसानों के मनोरंजन के साधनों में भी परिवर्तन आ गया है। अब वे टीवी, सिनेमा देखना अधिक पसंद करते हैं, साथ ही कबड्डी, कुश्ती के बजाय क्रिकेट, वॉलीबॉल खेलना पसंद करते हैं।

आधुनिकीकरण द्वारा कृषि में परिवर्तन

हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और नीली क्रांति आधुनिकरण के कारण आई हैं। किसानों द्वारा आधुनिक वैज्ञानिक चीजों का प्रयोग निम्नलिखित रुप से किया जा रहा है-

i. किसानों द्वारा खेत जोतने के लिए अब बैलों की जगह ट्रैक्टर का प्रयोग किया जा रहा है।

ii. आधुनिकीकरण से एक ही मौसम में कई फसलें वैज्ञानिक ढंग से उत्पन्न हो रही हैं।

iii. प्राचीन कृषि पद्धति की जगह नवीन वैज्ञानिक कृषि पद्धति को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

iv. फसल को कीड़ों-मकोड़ों से बचाने के लिए कीटनाशकों एवं

औषधियों का प्रयोग बढ़ गया है।

v. देश में हरित क्रांति लाने में उर्वरको का महत्वपूर्ण योगदान है। और इनकी खपत लगातार बढ़ रही है।

vi. कृषि क्षेत्र में यंत्रीकरण - पहले किसान बैल, हल और कुएं के अलावा अन्य बातों से सामान्यतः अनभिज्ञ थे। आज विज्ञान और तकनीकी के विकास के कारण बहुत से कृषि यंत्रों का प्रयोग होने लगा है। इसमें ट्रैक्टर, कंबाइंड ड्रिल, हार्वेस्टर, पंपिंग सेट एवं ट्यूबेल आदि प्रमुख हैं।

vii. सिंचाई क्षमता - आधुनिकीकरण के कारण सिंचाई सुविधाओं में बहुत अधिक परिवर्तन आया है। अब क्यारी-धोरों के स्थान पर स्प्रिंकलर सिस्टम, बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति, का उपयोग होने लगा है। साथ ही डिजिटल खेती के अंतर्गत ग्रीन-हाउस, नेट- हाउस, पॉलीहाउस आदि से कृषि क्षेत्र में बड़ा बदलाव आ रहा है।

किसानों पर आधुनिकीकरण से सामाजिक ढांचे में विसंगतिया भी बढ़ रही है। संयुक्त परिवारों के टूटने से खेत के भी टुकड़े हो जाते हैं। छोटे होते खेत जोत किसानों के लिए कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न करते हैं। वृद्धों के प्रति अनादर की भावना में वृद्धि के साथ व्यक्तिवाद पनप रहा है। खेती में अधिक फसल प्राप्त करने के लिए भूमिगत जल, खाद और कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग किया जा रहा है जिससे पर्यावरण संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो रही है। भूमि का जल स्तर भी निरंतर गिरता जा रहा है, साथ ही यंत्रीकरण के उपयोग से कृषि श्रमिकों में बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है।

किसानों पर वैश्वीकरण का प्रभाव

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसके जीवन की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में ही होती है, वह अकेला रह कर अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता है। उसी प्रकार आज वैश्वीकरण में कोई देश (राज्य) बिना दूसरे देश से व्यापार या संपर्क किए अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। संसार में रोज नए अनुसंधान हो रहे हैं, उनका फायदा दूसरे देश को तभी मिल सकता है, जब वह देश आपस में एक-दूसरे के संपर्क में रहेंगे।

वैश्वीकरण का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव जो कृषि पड़ा उसके परिणाम स्वरूप भारतीय कृषक जहॉ पहले अपने समुदाय से संबंधित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पैदावार करता था, वहीं अब वे लाभ के उद्देश्य से वस्तुओं का उत्पादन करता है। वैश्वीकरण ने भारतीय 'कृषक' को 'किसान' बना दिया है। वैश्वीकरण ने किसानों तक मशीनीकरण, उन्नत तकनीक और हाइब्रिड बीजो, उर्वरको आदि की आसान पहुंच बना दी है। उत्पादकता और फसल की प्रगति पर भारी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण के अगर ढेरों फायदें हैं तो कई नकारात्मक प्रभाव भी है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से पूंजीवाद को बढ़ावा मिलता है, साथ ही प्रतिस्पर्धा की वजह से किसानों और राष्ट्र हितों को नुकसान पहुंचता है।

जयपुर जिले में कृषि प्रशिक्षण और अनुसंधान केंद्र

जिला	कृषि विज्ञान केंद्र (KVK)	कृषि अनुसंधान केंद्र (ARS)	कृषि अनुसंधान उप-केंद्र
जयपुर	कोटपुतली, टाकरेड़ा(चौमू)	दुर्गापुरा	कोटपुतली

जयपुर जिले में कृषि का आधुनिकीकरण और बदलाव

जयपुर जिले में कृषि का आधुनिकीकरण की शुरुवात वर्ष 1960 के बाद हुई। जयपुर जिले में वर्तमान में कृषि परिस्थितिकी में बढ़ती मशीनों का उपयोग कृषि आधुनिकीकरण का सूचक है। ट्रैक्टर, कृषि उपकरणों में सबसे अधिक उपयोगी साबित हुआ है। ट्रैक्टर से खेतों की जुताई, बुवाई, अनाज निकालने, खेत को समतल करने, फसलों को लाने ले जाने, फसल की कटाई करने आदि कृषि कार्य कम समय में हो रहे हैं। यह एक बहुउद्देशीय मशीन है, जिसके द्वारा किसानों के अनेक उद्देश्य की पूर्ति आसानी से हो जाती है। कृषि मशीनीकरण में ट्रैक्टर को कृषि का आधार स्तंभ माना गया है। जयपुर जिले में हरित क्रांति के आगमन के साथ ही ट्रैक्टरों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। जयपुर जिले की चौमू तहसील में सर्वाधिक ट्रैक्टर एवं थ्रेसर है। जिले में विभिन्न किसानों से प्राप्त सूचनाओं से साफ नजर आता है कि किसान अब आधुनिकीकरण के इस युग में परंपरागत साधनों को छोड़कर ट्रैक्टर से खेती कर रहे हैं। जिन किसानों के पास ट्रैक्टर नहीं है वह भी अपने साथी किसानों से किराए पर लेकर अपने खेत में बुवाई से लेकर कटाई व फसल को लाने ले जाने के सभी काम ट्रैक्टर द्वारा करा रहे हैं। ट्रैक्टर द्वारा अकेला आदमी ही काफी विस्तृत क्षेत्र में जुताई आसानी से कर लेता है और उत्पादन में दिनों दिन तीव्र गति से वृद्धि हो रही है।

सारणी 1: जयपुर जिले में कृषि यंत्रों का प्रयोग 2011 से 2017

वर्ष	विधुत कुँए एवं ट्यूबेल	डीजल पंपसेट
2011-12	139933	20631
2012-13	148631	18362
2013-14	149610	18920
2014-15	148009	21312

2015-16	152541	22458
2016-17	172161	19369

स्रोत - राजस्थान एग्रीकल्चरल स्टैटिक्स एट ए ग्लांस 2017-18

https://agriculture.rajasthan.gov.in/content/dam/agriculture/Agriculture%20Department/agriculturalstatistics/rajasthan%20agriculture%20statistics%20at%20a%20glance%202017-18-merged.pdf

सारणी 2: जयपुर मे ट्यूबवेल एवं खुले कुँए की संख्या वर्ष 2018-19

ट्यूबवेल			खुला कुआं		
विधुत द्वारा	डीजल द्वारा	कुल	विधुत द्वारा	डीजल द्वारा	कुल
293350	779	294129	40001	9240	49241

स्रोत - एग्रीकल्चरल स्टैटिक्स 2018-19, डिपार्टमेंट ऑफ प्लानिंग, जयपुर

https://rajas.raj.nic.in/PDF/99202135102PMPDFAG.pdf

सारणी 3: जयपुर मे कुँए एवं ट्यूबवेल की संख्या वर्ष 2016-17

जयपुर	पुराने कुएं	नए कुएं	पुराने मरमत	कुल	उपयोग से बाहर कुएं	पीने के पानी के लिए कुआं	कूल	ट्यूबवेल
1	2	3	4	5=2+3+4	6	7	8	9
जयपुर	86859	6	607	81472	61713	230	143415	61264

स्रोत- राजस्थान एग्रीकल्चरल स्टैटिक्स एट ए ग्लांस 2017-18

https://agriculture.rajasthan.gov.in/content/dam/agriculture/Agriculture%20Department/agriculturalstatistics/rajasthan%20agriculture%20statistics%20at%20a%20glance%202017-18-merged.pdf

सारणी संख्या 1 और सारणी संख्या 2 से प्रमाणित होता है कि सन् 2011-12 से 2016-17 तक एक ओर ट्यूबवेलों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, तो दूसरी ओर कुछ अपवादो को छोड़कर डीजल पंप सेटों की संख्या में निरंतर कमी हो रही है। जिले में तेजी से विधुतीकरण हो रहा है जिससे डीजल पंपसेटों का स्थान विधुत संचालित मोटर ले रही हैं। ट्यूबवेलो की बढ़ती संख्या का मुख्य कारण गिरता भूजल स्तर और संयुक्त परिवारों का विघटन है। गिरते भू-जल स्तर के कारण किसान पानी कम पड़ने पर नया ट्यूबवेल खुदवा रहे हैं। संयुक्त परिवार के विघटन के कारण जब दो भाई अलग होते हैं तो वे व्यक्तिवादी भावना के कारण अपना निजी ट्यूबेल बनवाना चाहते हैं, ताकि आपसी विवाद न हो। इसलिए इस तरह ट्यूबवेलो की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। डीजल पंपसेट का अधिकतम उपयोग 1990 से पहले हो रहा था किंतु घटते जलस्तर आधुनिकीकरण से विधुतीकरण में तेजी आई है। विधुत पंप सेट में लागत भी डीजल पंपसेट से कम आती है और पानी खींचने की क्षमता अधिक होती है। इस तरह आधुनिकीकरण से नवीन तकनीक व यांत्रिक उपकरणों के प्रयोग से कम समय में कम लागत में अधिक कार्य का संपादन होने लगा है।

सारणी संख्या 3 से साफ सिद्ध होता है कि ट्यूबबेलो से भूमिगत जल लगातार घटता जा रहा है। क्षेत्र में लगभग 6713 कुँए ऐसे हैं जिनका अब खेती में उपयोग नहीं हो रहा है। लगभग 230 कुँए केवल पीने के पानी के लिए ही उपयोग में ले जा रहे हैं। आधुनिकीकरण का यह नकारात्मक परिणाम है कि पानी के अत्यधिक दोहन के कारण जल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। वर्तमान में सरकार द्वारा फव्वारा पद्धति, बूंद बूंद सिंचाई से पानी को बर्बाद होने से काफी बचाया जा रहा है। आधुनिक सिंचाई पद्धति जैसे- स्प्रिंकलर सिस्टम व ड्रिप इरिगेशन पर केंद्र व राज्य सरकार दोनों मिलकर क्षेत्र के किसानों को 90% तक सब्सिडी प्रदान कर कर रही है ताकि पानी की बर्बादी को रोका जा सके।

आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण का रहन-सहन पर प्रभाव

राजस्थान के कृषकों में आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण का प्रभाव साफ नजर आता है। उनके पारंपरिक खान-पान, रहन-सहन और व्यवहार प्रतिमान में काफी परिवर्तन आया है। अब युवा किसान धोती-कुर्ते के स्थान पर पेंट कमीज पहनने लगे हैं, संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है, पश्चिमीकरण के परिणाम स्वरूप शिक्षा का विकास हुआ है, खेती में ज्यादा लाभ न मिल पाने के कारण वह नौकरी एवं अन्य व्यवसाय की तलाश में लोग अपने परिवार को छोड़कर शहरों में आ रहे हैं, स्त्रियां भी अपनी अधिकारों की मांग करने लगी है जिसके परिणाम स्वरूप संयुक्त परिवारों का स्थान एकाकी परिवार ले रहे हैं। सामाजिक संस्थाओं जैसे- जाति, विवाह और धर्म में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण से शिक्षा का प्रसार हुआ और किसानों में जन

चेतना विकसित हुई है। पहले किसानों में अज्ञानता व अशिक्षा के कारण अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, देवी-देवताओं में आस्था, भाग्यवादीता, भूत प्रेत, छुआछूत, बाल विवाह, विधवा विवाह निषेध, मृत्यु भोज, जादू टोना आदि अनेक कुरीतियाँ धर्म में के नाम से प्रभावी थीं। यहाँ 28% लोग इन अंधविश्वासों, पुराने रीति-रिवाजों, मृत्यु भोज, जादू टोना आदि में अब भी विश्वास रखते हैं।

आधुनिकीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव

हरित क्रांति के पश्चात राजस्थान के तमाम जिलों में कृषि के आधुनिकीकरण, मशीनीकरण, उन्नत बीजों का प्रयोग, रासायनिक खाद का उपयोग, सिंचाई सुविधाओं का विकास के परिणाम स्वरुप अन्न उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई है। खरपतवारनाशक, कीटनाशकों, फफूंदनाशको और रासायनिक खाद के प्रयोग ने हमारे अन्न भण्डारों को तो भर दिया है, परंतु इन के अंधाधुंध प्रयोग ने पर्यावरण को बुरी तरह से प्रभावित करना भी शुरू कर दिया है। किसान अधिक उपज प्राप्त करने के लिए अब संकर (हाइब्रिड) बीजों का प्रयोग कर रहे हैं साथ ही कीटनाशकों एवं रसायनिक खादों का प्रयोग भी पिछले 20-25 सालों में लगातार बढ़ता ही जा रहा है। विशेषकर फल व सब्जियों में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, जहरीले रंगो आदि का अत्यधिक उपयोग हो रहा है जिनसे स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं जैसे- सिरदर्द, जी-घबराना, चक्कर आना, सफेद दाग तथा कैंसर जैसे प्राणघातक रोगों में वृद्धि हो रही है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि कृषि कार्यों में उपयोग होने वाले कीटनाशक हमारे परिवार को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं।

विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी योजनाओं का प्रभाव

राज्य में कृषि विकास की विभिन्न योजनाएं जैसे- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, फार्म पॉन्ड आदि चल रही है। सर्वेक्षण में किसानों ने माना कि उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति इन योजनाओं से सुधर रही है। परंतु बहुत सारी योजनाओं का लाभ केवल शिक्षित व प्रभावशाली किसानों को ही अभी तक मिला है, अभी भी इन योजनाओं को सुनिश्चित तरीके से लागू करना एक बड़ी चुनौती है। कृषि क्षेत्र में भ्रमण करने से अब हम खेतों में देख सकते हैं कि; जगह-जगह किसान फव्वारा पद्धति, बूंद-बूंद सिंचाई, सोलर पंप का उपयोग कर रहे हैं। कई जगह हमें फॉर्म पॉण्ड, पॉलीहाउस ग्रीनहाउस, नेटहाउस भी देखने को मिलते हैं, परंतु यह सब प्रभावशाली किसानों ने ही सब्सिडी लेकर अपने खेतों में लगवा रखे हैं। सरकार को चाहिए कि वह लघु व सीमांत किसानों को ध्यान में रखकर ज्यादा से ज्यादा योजनाएं बनाये। कुल मिलाकर कृषि क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं के फलस्वरुप किसानों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति पहले से बहुत सुधरी है।

आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण का डिजिटल खेती पर प्रभाव

डिजिटल खेती यानी फसलों की पैदावार बढ़ाने और खेती को सक्षम व लाभदायक बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों और सेवाओं का इस्तेमाल करना। राजस्थान में आज भी ज्यादातर खेती मानसून पर टिकी हुई है, जिसमें ज्यादा जोखिम है। लेकिन किसान घर बैठे कृषि वैज्ञानिकों बताए तरीकों से इन समस्याओं से निपट सकते है, कम पढ़े लिखे किसान भी वीडियो देखकर और सुनकर खेती के बारे में जानकारी ले सकते हैं। किसानों से जुड़े कई मोबाइल एप्स के माध्यम से किसान चुटकियों में जानकारी और घर बैठे ही फसल की फोटो भेज कर कृषि सलाहकारों से सलाह ले सकते हैं। सर्वेक्षण में सामने आया है कि लगभग 20% किसान डिजिटल खेत के विभिन्न एप्स का फायदा उठा रहे हैं। धीरे-धीरे बहुत से किसानों ने डिजिटल खेती को अपनाना शुरू कर दिया है। कम पढ़े-लिखे किसानों ने भी दूसरों की मदद से सोशल मीडिया पर आईडी बनवाई है और यूट्यूब, फेसबुक और व्हाट्सएप का इस्तेमाल कर रहे हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, एवं वैश्वीकरण से अध्ययन क्षेत्र के किसानों पर सामाजिक व आर्थिक प्रभाव एवं परिवर्तन साफ दिखाई देता है और पहले से किसानो सामाजिक आर्थिक स्थिति सुधरी है। परिवर्तन एवं विकास की गति के संबंध में मुख्य पहलू सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक है। किन्तु इन सभी में विकास एवं परिवर्तन की गति सामान अवस्था में नहीं पाई गई है। जहां आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप परम्पागत खेती के तरीकों में परिवर्तन एवं विकास की गति तीव्र है; वहीं सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पहलुओं में बहुत धीमी गति से परिवर्तन हो रहा है। अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण किसानों में सामाजिक परिवर्तन की गति धीमी है। अभी भी किसानो ने पूरी तरह से परंपराओं, अंधविश्वासों, झाड़-फूंक, जादू टोना, पर्दा प्रथा, मृत्यु भोज, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह आदि कुरीतियों और बुराइयों से पूरी तरह छुटकारा नहीं पाया है। लगभग 30% किसान आज भी इन परंपराओं में विश्वास रखते हैं। खेतों में नवाचार, यंत्रीकरण, डिजिटल खेती एवं शिक्षा के कारण तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। आधुनिकीकरण के फलस्वरुप एकाकी परिवार की प्रवृत्ति बढ़ी है, व्यक्तिवाद को बढ़ावा मिला है, खेतों के टुकड़ों के कारण खेत जोत छोटे होते जा रहे हैं। वही हरित क्रांति के पश्चात खेतों में ट्रैक्टर, स्प्रिंकलर सिस्टम,ड्रिप इरीगेशन, सोलर पंप सेटो और रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का तेजी से उपयोग बढ़ा है। आधुनिक खेती ने हमारे अनाज के

गोदामों को तो भर दिया है परंतु पर्यावरण की समस्या भी उत्पन्न कर दी है। निष्कर्ष के तौर कहा जा सकता है कि यदि हमें अपने खेतों से लगातार उत्पादन करना है तो हमे परंपरागत खेती व आधुनिक खेती के बीच समन्वय स्थापित करना होगा। हमें उर्वरको, कीटनाशको का सीमित उपयोग कर जैविक खाद व गोबर खाद की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

REFERENCES

1. लवानिया, एम. एम एवं जैन, शशि के., "ग्रामीण समाजशास्त्र", रिसर्च पब्लिकेशंस, जयपुर

2. पालीवाल, दीपक, (2020), "ग्रामीण समाजशास्त्र -1", उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय प्रकाशन, हल्द्वानी. https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/MASO-504.pdf

3. शर्मा, वीरेंद्र प्रकाश (2004), "ग्रामीण समाजशास्त्र", पंचशील प्रकाशन, जयपुर जयपुर

4. राष्ट्रीय किसान नीति 2007, कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार. https://agricoop.nic.in/sites/default/files/npfhindi.pdf

5. शेखावत, धीर सिंह (2018), "कृषि का आधुनिकीकरण - आलोचनात्मक अध्ययन",JMME,

6. कुलदीप अरविंद कुमार (2019), "कोटपूतली तहसील में कृषि आधुनिकीकरण के पर्यावरण पर प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन", जर्नल ऑफ़ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चस इन एलाइड एजुकेशन.

7. राजस्थान एग्रीकल्चरल स्टैटिक्स एट ए ग्लांस 2017-18, डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान https://agriculture.rajasthan.gov.in/content/dam/agriculture/Agriculture%20Department/agriculturalstatistics/rajasthan%20agriculture%20statistics%20at%20a%20glance%202017-18-merged.pdf

8. एग्रीकल्चरल स्टैटिक्स 2018-19, डायरेक्टरेट आफ इकोनॉमिक्स एंड स्टैटिक्स, डिपार्टमेंट ऑफ प्लानिंग, जयपुर, राजस्थान https://rajas.raj.nic.in/PDF/99202135102PMPDFAG.pdf

9. राजस्थान एग्रीकल्चरल स्टैटिक्स एट ए ग्लांस 2017-18, डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर, गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान https://agriculture.rajasthan.gov.in/content/dam/agriculture/Agriculture%20Department/agriculturalstatistics/rajasthan%20agriculture%20statistics%20at%20a%20glance%202017-18-merged.pdf